नाम --- डॉ मनोज कुमार ,अतिथि शिक्षक
महाविद्यालय -- MHM महाविद्यालय ,सोनवर्षा राज ,सहरसा
विभाग -- दर्शन शास्त्र विभाग
विषय -- INDIAN PHILOSOPHY
वर्ग -- B.A Part -I साथ ही M. A के छात्रों के लिए भी सहायक

विषयवस्तु -- बौद्ध दर्शन में हीनयान संप्रदाय और उनकी मुख्य विशेषता

संप्रदाय का उदय :-

भगवान बुद्ध के उपदेश मौखिक थे और उनके शिष्य उन्हें याद कर पाठ किया करते थे। बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात उनके उपदेशों को संकलित करने की दृष्टि से राजगृह में 483 ईसा पूर्व में प्रथम धर्म संगति हुई। जिसमें विनयपिटक (आचार संबंधी ग्रंथ) और सुत्तपिटक (उपदेश संबंधी ग्रंथ) के प्राचीनतम अंश संकलित किए गए। लगभग 100 वर्ष पश्चात वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगति हुई। जिसमें विनय पिटक और सुत्तपिटक का विस्तार किया गया तथा अभिधम्म पिटक दार्शनिक ग्रंथ के कुछ अंश संकलित हुए। इस संगति में भिक्षु संघ थेरवाद और महासांधिक किन दो दलों में विभक्त हो गए। जो आगे चलकर हीनयान और महायान कहलाए।
लगभग 249 ईशा पूर्व सम्राट अशोक द्वारा पाटलिपुत्र में आयोजित तृतीय बौद्ध संगति में थेरवादियों द्वारा विनय ,सुत्त एवं अभिधम्म नामक पालितिपिटक संकलन हुआ। यही पालितिपिटक अब तक उपलब्ध है और बुद्ध के दर्शन और धर्म को जानने का उपलब्ध सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ संग्रह है।
भारत में तृतीय संगति के बाद से सर्वास्तिवाद थेरवाद से अलग हो गया तथा थेरवाद का ह्रास और सर्वास्तिवाद का विकास होने लगा। बौद्ध दर्शन की चौथी संगति महाराजा कनिष्ठ (ईशा पू 73-103) के समय हुई। जिसमें सर्वास्तिवाद के त्रिपिटक का निर्धारण हुआ। सर्वास्तिवाद को वैभाषिक भी कहते हैं। बाद में इसी की एक शाखा सौत्रान्तिक नाम से कुछ मतभेदों के कारण अलग हो गई। थेरवाद (स्थिविरवाद) ,वैभाषिक (सर्वास्तिवाद) और सौत्रान्तिक ही हीनयान के तीन प्रमुख संप्रदाय हैं। माध्यमिक (शून्यवाद) ,योगाचार (विज्ञानवाद) और स्वत्रंत-योगाचार ही महायान के तीन प्रमुख सम्प्रदाय है।
इस प्रकार बौद्ध दर्शन के दो प्रमुख संप्रदाय हुए जो हीनयान और महायान कहलाए। शेष इन्हीं के अंग कहलाए।

बौद्ध मत के धार्मिक संप्रदाय --

धार्मिक विषयों को लेकर बौद्ध मत के दो संप्रदाय बने - हीनयान (थेरावाद) और महायान ..!हीनयान बौद्ध दर्शन का प्राचीनतम रूप है। हीनयान का शाब्दिक अर्थ छोटी गाड़ी या

लघुपन्थ है। वस्तुतः यह नाम महायानी आचार्यों का दिया हुआ है। महायानवादी थेरवाद को अपनी दृष्टि से हेय मानकर उन्हें हीनयान अर्थात निर्माण प्राप्ति की निकृष्ट मार्ग कहते हैं और अपने सिद्धांत को महायान कहते हैं। महायान का शाब्दिक अर्थ है बड़ी गाड़ी या बृहद मार्ग अर्थात निर्माण प्राप्ति का उत्कृष्ट मार्ग।

हीनयान और महायान के विचारों में अंतर --

हीनयान जैन धर्म की तरह अनीश्वरवादी है। इसमें ईश्वर के बदले कम्म और धम्म को माना गया है। संसार का परिचालन इसी धम्म के द्वारा होता है। धम्म के कारण कर्म फल का नाश नहीं होता। वस्तुतः अपने कर्मानुसार ही प्रत्येक व्यक्ति मन ,शरीर तथा निवास स्थान को प्राप्त करता है। बुद्ध के जीवन तथा उपदेश से मनुष्य अपने आदर्श को जानता है तथा यह भी समझता है कि कोई भी बंधनग्रस्त व्यक्ति निर्वाण प्राप्त कर सकता है। अपने धर्म के अनुयायियों के साथ संबंध होने पर भी आध्यात्मिक जीवन की सहायता मिलती है। इसलिए बुद्ध ,धम्म और संघ इन तीनों की शरण लेनी चाहिए। हीनयानी को धर्म की नियामकता पर भी पूरी श्रद्धा है। बुद्ध के बताए मार्ग पर चलकर इस जीवन में या अन्य किसी भविष्य जीवन में निर्वाण प्राप्त अवश्य होगी। हीनयान का लक्ष्य अहर्त होना या निर्वाण प्राप्त करना है। निर्वाण या निब्बाण में दुख का अस्तित्व नहीं रहता। हीनयान के अनुसार मनुष्य अपने प्रयत्न से ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है। स्वयं महात्मा बुद्ध ने कहा है :- "आत्म दीपो भव"। उनकी यह उक्ति ही हीनयान का मूल मंत्र है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चेष्टा से अपने कल्याण के लिए निर्वाण प्राप्त करनी चाहिए। यह संभव भी है। इससे स्पष्ट है कि यह मार्ग धर्म वीरों के लिए है। किंतु संसार में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है।
समय की प्रगति के अनुसार बौद्ध धर्म के अनुयायी बहुत अधिक बढ़ गए। फल यह हुआ कि इसमें ऐसे लोग आ गए। जिनके लिए ऊपर बताए मार्ग पर चलना अत्यंत कठिन हो गया। अधिकांश लोग दूसरे धर्मों को छोड़कर आए थे। वे न तो बुद्ध के बतलाए मार्ग को समझते थे ना , उनके अनुसार चलने की शक्ति उनमें थी। इस तरह बौद्धों के सामने एक विकट समस्या उत्पन्न हो गई। उन्हें आदर्श की रक्षा के लिए अनुयायियों की एक बड़ी संख्या से संबंध तोड़ना पड़ता या अनुयायियों के साथ रखने के लिए आदर्श को छोड़ना पड़ता। कुछ कट्टर धार्मिकों ने आदर्श के वजाय अनुयायियों से संबंध तोड़ना ही अच्छा समझा। किंतु अधिकांश लोगों ने कट्टरपंथियों का साथ छोड़ा और जनसाधारण के लिए एक भिन्न संप्रदाय कायम किया। नए संप्रदाय का नाम महायान तथा पुराने संप्रदाय का हीनयान पड़ा। हीनयान के द्वारा कम ही व्यक्ति जीवन के लक्ष्य-स्थान तक जा सकते हैं। किंतु महायान के द्वारा अनेक व्यक्ति जीवन के लक्ष्य-स्थान तक पहुंच सकते हैं। उपयुक्त वर्णन से स्पष्ट है कि महायान में उदारता तथा धर्म प्रचार की भावनाएं वर्तमान थी। फलस्वरूप महायान का प्रचार हिमालय के उत्तर चीन , कोरिया तथा जापान तक हो गया। जबकि हीनयान धर्म लंका , वर्मा ,थाईलैंड (श्याम) आदि देशों में प्रचलित है।

हीनयान में आध्यात्मिक विकास (दशभूमि) :--

हीनयान में विकास के चार चरण माने गए हैं।

(1) श्रोतापन्न -- इस अवस्था में साधक का मन संसार से हटकर निर्वाण की ओर लगता है। उनकी वृत्ति अंतर्मुखी होती है। धर्म में अभिरुचि उत्पन्न होती है।

(2) सकृदागामी -- साधक निर्वाण की ओर अग्रसर होता है और निर्वाण का अधिकारी बन जाता है। परंतु निर्वाण प्राप्ति के लिए उसे एक बार और संसार में आना पड़ता है। अर्थात एक बार और उसको पुनर्जन्म का दुख भोगना पड़ता है।

(3) अनागामी -- यह साधक का अंतिम जन्म है। वह पुनः संसार में नहीं आता।

(4) अहर्त -- यह हीनयान का सर्वोच्च आदर्श है। अहर्त का अर्थ "कृतकार्य पुरुष" जन्मझीण हुआ। ब्रम्हचार्यवास समाप्त हुआ। जो कुछ करना था। वह कर लिया। अब आगे कुछ करने को नहीं है। अतः अहर्त झिणासव मुक्त महापुरुष है। प्रज्ञा ,शील और समाधि नामक त्रिरत्न को वे पूर्णतः धारण करते हैं। अतः अहर्त तत्व संपूर्ण धर्म का अंतिम साध्य या लक्षण है। जिसे इस पद की प्राप्ति हो जाती है। वह जीवन्मुक्त हो जाता है। शरीर से छूट जाने पर वह जन्म-मरण के बंधन से सदा के लिए मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसी पद की प्राप्ति के लिए भगवान बुद्ध की सारी शिक्षा है। अतः हीनयानी आचार्य इसी को परम-पद ,परम-लाभ मानते हैं। यह व्यक्तिगत मोक्ष है।

हीनयान की मुख्य विशेषताएं ---

---

(1) प्रतीत्यसमुत्पाद :- बुद्ध का केंद्रीय दार्शनिक सिद्धांत प्रतीत्यसमुत्पाद है जो , व्यवहार में सापेक्ष कारण कार्य वाद और परमार्थ में बोधि या निर्वाण है। प्रसन्नपदा में उध्दृत बुद्ध का कथन है कि - " प्रतीत्य शब्दो लयबन्तः प्राप्तावपेझायां ! हेतुप्रत्ययापेझो भावनामुत्पादः प्रतीत्य-समुत्पादार्थः !!"

किंतु हीनयान ने इस कारण-कार्य-भाव को कार्य की वास्तविक उत्पत्ति माना। उनके अनुसार सापेक्ष पद का यह अर्थ है कि कार्य की उत्पति के पूर्व कारण का होना आवश्यक है। सापेक्ष पद का यह अर्थ नहीं है कि आज की सत्ता सापेक्ष या प्रातितिक है। कार्य वस्तुतः उत्पन्न होता है और उसकी सत्ता वास्तविक है। हीनयान के अनुसार :- " इतिर्गमनं विनाशः ! इतौ साधव इत्या ! प्रतिर्वीप्सार्थः !प्रति प्रति इत्यानां विनाशिनां समुत्पादः !! "

इसका अर्थ है कि क्षणिक धर्मों का निरंतन प्रवाह, जिसमें पूर्व अंग कारण और उत्तर अंग कार्य है।

(2) झणभंगवाद -- हीनयान बुद्ध के अनित्यवाद को जिसका लोक में प्रत्यक्ष अनुभव होता है। झणभंगवाद सिद्धांत के रूप में परिणत कर दिया इनका उद्घोष है - "सर्व झणिकम," अर्थात सब कुछ क्षणिक है। परिवर्तन की धारा वह रही है। कोई एक वस्तु या वही पदार्थ नहीं है

क्योंकि, यदि किसी धर्म में एक या वहीं माना जाएगा तो , वह क्षणिक नहीं होगा। अतः कोई प्रवाह-नित्य वस्तु नहीं है जो, परिवर्तन में अपनी एकता और अपना तादात्म्य स्थाई रूप से बनाए रहे। केवल क्षणिक धर्मों की धारा वह रही है। यह धर्म दो प्रकार के हैं - चेतन और अवचेतन। दोनों परस्पर स्वतंत्र है और दोनों सत् है। चेतन धर्म विज्ञान है और अचेतन धर्म भौतिक परमाणु है। इन क्षणिक विज्ञानों को और क्षणिक परमाणुओं की अलग-अलग धाराए सतत बह रही है। सब क्षणिक धर्म , विज्ञान और परमाणु प्रतीत्यसमुत्पाद है , संस्कृत है ,कारण-कार्य नियम से बंधे हैं। क्योकि क्षणिक धर्मों के निरंतर प्रवाह में पूर्वगामी क्षणिक धर्म कारण और उत्तर भावी क्षणिक धर्म उसका कारण है। कारण- झण उत्पन्न होते ही कार्य-झण को जन्म देकर नष्ट हो जाता है। इसप्रकार प्रति-झण इन क्षणिक धर्मो का उत्पाद विनाश होता रहता है। सत् का लक्षण है कार्योत्पाद क्षमतावान , जिसमें कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति अर्थात अर्थक्रियासामर्थ्य हो , वही सत् है। अर्थात प्रतीत्यसमुत्पाद के कारण-कार्य-प्रवाह में प्रवाहमान क्षणिक धर्म ही सत् है :- " यत क्षणिकं तत सत्!" इस अर्थ में क्षणिक विज्ञान और क्षणिक परमाणु सत् है।

झणभंगवाद का दूसरा उद्घोष है:- "सर्वम अनात्म " अर्थात कोई नित्य द्रव्य नहीं है। ना चेतन और ना जड़ ,ना कूटस्थ-नित्य और ना परिणति-नित्य। ना तो कोई आत्मा या पुदगल नामक चेतन द्रव्य और ना ही कोई भौतिक पदार्थ नामक जड़ द्रव्य। द्रव्यता एकता ,तादात्म्य ,नित्यता आदि कल्पना मात्र है। सत् केवल क्षणिक धर्म है। क्षणिक विज्ञानों के प्रवाह पर पुदगल या जीवात्मा का आरोप या उपचार कर दिया जाता है और क्षणिक परमाणुओं के प्रवाह पर भौतिक पदार्थ का। वस्तुतः ना कोई आत्मा है और ना ही कोई भौतिक पदार्थ , क्षणिक विज्ञानों और क्षणिक परमाणुओं के प्रवाह या संतान को सन्तानवाद की संज्ञा दी गई है। किंतु यह विज्ञान और परमाणु मिलकर अपने संघात या समुच्चय भी बनाते रहते हैं जो , परिणाम के कारण बनते-बदलते हैं। इसे संघातवाद का नाम दिया गया है। सन्तानवाद और संघातवाद झणभंगवाद के ही दो रूप है।

हीनयान ने क्षणिक प्रवाह को समझाने के लिए नदी की जलधारा के दृष्टांत दिए हैं। हम उसी जल में दोबारा नहीं नहा सकते क्योंकि , नदी के जिस जल में हमने पहली डुबकी लगाई थी। वह तो वह कर आगे चला गया और दूसरी डुबकी दूसरे जल में ही लगेगी। नदी जल समूहों का निरंतर प्रवाह है। जिसमें एक जल समूह के बहने के बाद तुरंत दूसरा जल समूह उसका स्थान ले लेता है और इस प्रकार क्रम चलता ही रहता है। प्रवाह के तीव्र वेग और निरंतरता के कारण समानता पर एकता का आरोप और प्रवाह की अनवच्छिभता पर नित्यता का आरोप कर दिया जाता है किंतु , यह आरोप उपचार मात्र है तथा वस्तुतः भ्रांति है।

(3) कर्म -- हीनयान ने कर्त्ता के विना कर्म को स्वीकार किया है। जीव या पुदगल नहीं है किंतु , पुनर्जन्म होता है। इस जन्म का अंतिम विज्ञान अगले जन्म के प्रथम विज्ञान को उत्पन्न करता है। कर्म-सिद्धांत निवैय्क्तिक नियम है। जो स्वतः प्रभावशील है। यह किसी ईश्वर या जीवात्मा पर निर्भर नहीं रहता है। कर्म सूक्ष्म परमाणु रूप भी नहीं है।

(4) अनीश्वरवादी -- हीनयान में भक्ति धर्म का सर्वथा अभाव है। हीनयान के अनुसार महात्मा बुध एक मरण धर्मा मनुष्य ही थे। उनका जन्म ,शैशव ,विवाह ,संतान-प्राप्ति आदि अन्य मनुष्यों के समान ही है। उन्होंने अनवरत साधना कर बुद्धत्व लाभ किया। इस प्रकार हीनयान के अनुसार बुद्ध एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। इसमें ईश्वर की सत्ता को नहीं माना गया है। ईश्वर का स्थान हीनयान में कम्म तथा धम्म को दिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कम्म के अनुसार शरीर ,मन तथा निवास स्थान को अपनाता है। संसार का नियामक हीनयान के अनुसार धम्म है। धम्म के कारण व्यक्ति का कर्मफल का नाश नहीं होता। धम्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म के अनुयायियों को संघ में निष्ठा रखनी पड़ती है। अपने धर्म के अनुयायियों के साथ संघबद्ध होने के फलस्वरूप साधक को आध्यात्मिक बल मिलता है। बौद्ध धर्म के प्रत्येक अनुयायियों को :- "बुद्धम शरणम गच्छामि ,धम्म शरणम गच्छामि ,संघ शरणम गच्छामि " का व्रत लेना परम आवश्यक है।

(5) पारमिता की अवधारणा -- पारमिता का अर्थ पूर्णता है। हीनयान में क्लेशावरण के झय के लिए पारमिता की अवधारणाएं जन्म ली है। हीनयान में दस पारमिता का वर्णन है। वह है दान ,शील ,निष्कामना ,प्रज्ञा ,वीर्य ,झांति ,अधिष्ठान ,मैत्री और अपेक्षा।

(6) श्रावकयान -- श्रावकयान हीनयान बुद्धत्व या निर्वाण प्राप्त करने का मार्ग है गुरु के पास जाकर धर्म सीखने वाला व्यक्ति श्रावक कहलाता है। श्रावक के लिए हीनयान संप्रदाय में चार भूमियों का वर्णन है। यह है श्रोतापन्न ,सकृदागामी ,अनागामी और अहर्त।

(7) स्वावलंबन पर जोर -- हीनयान में स्वावलंबन पर जोर दिया गया है। प्रत्येक मनुष्य अपने प्रयत्नों से ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है। स्वयं बुद्ध ने कहा है कि :- "आत्मदीपो भव" बुद्ध के अंतिम शब्दों में भी जो इस प्रकार है - all constructed things or conglomerations are subject to destruction , one should try folileration by ones efforts . आत्मनिर्भर रहने का आदर्श है।

(8) निजी मोक्ष -- हीनयान के मतानुसार व्यक्ति को सिर्फ निजी मोक्ष की चिंता करनी चाहिए। यही कारण है कि हीनयान के अनुयायी अपने मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इस प्रकार हीनयान में परमार्थ की भावना का निषेध हुआ है।

(9) सन्यास को प्रश्रय -- हीनयान में सन्यास को प्रश्रय दिया गया है। हीनयान अपने चरम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इंद्रिय सुख का दमन करते हैं तथा एकांत में जीवन व्यतीत करते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति को पारिवारिक बंधन को त्यागने का आदेश दिया गया है। अतः हीनयान में भिक्षु जीवन या सन्यास को नीति सम्मत बतलाया गया है तथा इच्छा और वासना से विरक्ति का समर्थन किया गया है।

(10) निर्वाण -- हीनयान में निर्वाण के निषेधात्मक पहलू पर जोर देता है। हीनयान के ग्रंथों में निर्वाण को अविधा ,तृष्णा ,उपादान एवं तज्जन्य क्लेशों के निरोध के रूप में वर्णित किया गया है। हीनयान के अनुसार निर्वाण का अर्थ निर + वन या वान है। वन या वान का अर्थ तृष्णा या कामना है। निर का अर्थ बिना या रहित होना है। इस प्रकार निर्वाण का अर्थ तृष्णा

से रहित अवस्था है। पुदगल नैरात्म्य के ज्ञान से क्लेशावरण हट जाता है। अविधा एवं तज्जन्य ,तृष्णा ,उपादान आदि के झय से क्लेशझय होकर निर्वाण प्राप्त होता है। हीनयान में निर्वाण का अर्थ बुझ जाना है। जैसे तेल के झय से दीपक बुझ जाता है। वैसे ही क्लेश के झय से निर्वाण रूपी शांति मिलती है। निर्वाण को हीनयान में अभाव रूप माना गया है। इसका फल यह होता है कि निर्वाण का उत्साहवर्धक तथा प्रेरक नहीं रह जाता है।
(11) अहर्त -- हीनयान का आदर्श है अहर्त। अहर्त को हीनयान में चरम लक्ष्य माना गया है। अपने ही निर्वाण की प्राप्ति के लिए सदा उधोगशील रहता है। प्रज्ञापारमिता सूत्र में कहा गया है - " सर्वेषांमपि विराणां परार्थ नियंतात्मनाम ! बोधिका जनयित्री च माता त्वमसि वत्सला ! बुद्धेः प्रत्येक बुद्धेश्च श्रावकैश्च निसेविता !! "

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि हीनयान का संबंध बौद्ध धर्म के आदर्श की शुद्धता या स्वच्छता से है। ये रूढ़िवादी है। हीनयानी परिवर्तन के घोर विरोधी है। हीनयान के स्वावलंबन एवं सन्यास का आदेश अत्यंत कठिन है। हीनयान को अपनाकर कम ही व्यक्ति जीवन के लक्ष्य अहर्त को अपना सकते हैं। परन्तु हीनयान में मूल बौद्ध मत कि अधिकांश बात ज्यों की त्यों बनी रही है।

बुद्ध साहित्य का आधार --

बुद्ध साहित्य का आधार त्रिपिटक है। त्रि का अर्थ तीन और पिटक का अर्थ पिटारी (box) होती है। अर्थात त्रिपिटक का शब्दार्थ तीन पिटारियां है। जो बुद्ध के तीन ज्ञान की पिटारी कही जाती है। जो विनय पिटक ,सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक के नाम से विख्यात है।
--- धन्यबाद ----
मेल - manoj9430500987@gmail. com
मो (W)- 8084138030